

संस्कृत

स्नोम

१०१



स्वच्छ माका स्नोम

६९८/२८ २५

अथ स्वामाहुरत्तेत्र
चारुणः



"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

॥ ३ ॥

श्रीगुरुदत्तमंगलमूर्त्येनमः ॥ श्रीबालात्रीपुर
सुंदरी आंनपूर्णेश्वरीयेनमः ॥ उदारकाश्रीने
त्रामुकुटमणिमयेरत्नताटंकस्यराभ्यां ॥ इत्तांभो
जेतुपाशाकुशमदुनधनुसायकेविस्फुरंती ॥ रुड
गटविकृतकारइरोज्ज्वलांगी ॥ ध्यायेतांभोजइत्तां
वरुणीनिवसनामीश्वरीमाश्रयामि ॥ १ ॥ वैदवंब्रह्म
रंध्रंचमरुतकेचत्रिकोणकं ॥ ललाटेष्टारपत्रंचश्रु
र्मध्येचदशारकं ॥ २ ॥ बहिर्दशारकंकंठेतुमनव

॥ ३ ॥

सं सुदिस्थितं ॥ नाभोचवस्त्रं च कव्यौषोडशप
त्रकं ॥ ३ ॥ चतुत्रयं च कुरुभ्यां जानोच चतुरस्त्रकं
एवं क्रमेण यो विद्यात् जामंत्रं यथाविधि ॥ ४ ॥
विंदुं त्रिकोणवस्तुकोणदेशा युगं च मनवश्च नांग
दुरुसंयुतषोडशारं ॥ चतुत्रयं च धरणीस्तदुत्त
यं च श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः ॥ ५ ॥ श्रीं
ऐं ह्रीं श्रीं ॥ ॐ ॥ नमस्त्रिपुरसुंदरी रुद्रय देवी ॥ शि
रो देवी ॥ शिखा देवी ॥ कवच देवी ॥ नेत्र देव्यस्त्र

॥२॥

देवी ॥ कामेश्वरी ॥ भगमहिनी ॥ नित्य किं जे ॥ भे
रुंडे ॥ वही वासिनी ॥ माहावजे श्वरी ॥ शिवदू
ती ॥ खरिने ॥ कुरु सुंदरी ॥ नित्य ॥ नीरुपता के ॥
विजये ॥ स्वर्ग मंगले ॥ ज्वाला महिनि ॥ चित्रे ॥ महा
नित्ये ॥ परमेश्वर परमेश्वरी ॥ मित्रै शमयि ॥ षष्ठी श
मय्यु डी शमयि ॥ चयनाथ मयी ॥ लोपा मुद्राम
य्य गरुत्य मयि ॥ कारुताप नमयि ॥ धर्माचार्य ॥
मयि ॥ मुक्त केशी ॥ इश्वर मयि ॥ दीपक लनाथ म

॥२॥

यि॥ विष्णुदेवमयि॥ ब्रह्माकरदेवमयि॥ रौजोदेवम
यि॥ मनोजदेवमयि॥ कल्याणदेवमयि॥ रत्नदेव
मयि॥ वासुदेवमयि॥ श्रीरामानंदमय्यणिमसि
द्धौ लक्ष्मीमसिद्धौ॥ महिमसिद्धौ॥ इशिवसिद्धौ॥
वसिवसिद्धौ॥ वाकाम्यसिद्धौ॥ भुक्तिसिद्धौ॥
इच्छासिद्धौ॥ जाप्तासिद्धौ॥ सर्वकामसिद्धौ॥
ब्राम्ही॥ माहेश्वरी॥ कौमारी॥ वैष्णवी॥ वाराडि॥
माहेंद्रि॥ चामुंडी॥ माहालक्ष्मी॥ सर्वसंधोभिणि॥

॥३॥

सर्वविद्राविणी॥सर्वकिर्षिणी॥सर्ववश्यंकरा॥
सर्वेन्मादिनि॥सर्वमाहांकुशे॥सर्वखेचरी॥सर्व
बीजे॥सर्वयोने॥सर्वनिखंडे॥त्रैलोक्यमोहनच
क्रस्वामिनिम्ब॥शकटयोगिनि॥कामाकर्षिणी॥
अग्रहकाराकर्षिणी॥शब्दाकर्षिणी॥स्पर्शा
कर्षिणी॥रुपाकर्षिणी॥रसाकर्षिणी॥गंध
कर्षिणी॥चीताकर्षिणी॥धराकर्षिणी॥
स्मृत्याकर्षिणी॥नामाकर्षिणी॥बीजाकर्षिणी॥

॥३॥

विनि॥ आत्मा कर्षिणि॥ अमृता कर्षिणि॥ श
रीरा कर्षिणि॥ स्वशिवापरिपूरक चक्र रचामिनि॥
गुप्त योगिनी॥ अनंग कुसुमे॥ अनंग मैरवले॥ आ
नंग मदने॥ अनंग मदन गुरे॥ अनंग रेखे॥ अन
ग वैगिनि॥ अनंग कुशे॥ अनंग माहिनी॥ सर्वसं
क्षोभ्रण चक्र रचामिनि॥ गुप्तगर योगिनि॥ सर्वसं
क्षोभिनि॥ सर्वविद्रा विणि॥ सर्व कर्षिणि॥ सर्व
रूढिनि॥ सर्वसं मीहिनि॥ सर्व स्तंभी नि॥ सर्व

जंभिनि ॥ सर्वविक्षकरी ॥ सर्वरंजिनि ॥ सर्वेन्मादि
नी ॥ सर्वार्थसाधोनि ॥ सर्वसंपत्ति ॥ पूराणि ॥ सर्व
मंत्रमयि ॥ सर्वदुःखक्षयंकरि ॥ सर्वसौभाग्यदुयक
चक्रस्वामिनि ॥ संप्रदाययोगिनि ॥ सर्वसिद्धी
प्रदे ॥ सर्वसंपन्नदे ॥ सर्वप्रियंकरि ॥ सर्वमंगरुका
रिणि ॥ सर्वकामप्रदे ॥ सर्वदुःखविमोचनि ॥ सर्व ॥ १४ ॥
मृत्युप्रशमनि ॥ सर्वविघ्ननिवारिणी ॥ सर्वंगिसु
सुंदरि ॥ सर्वसौभाग्यदायिनि ॥ सर्वार्थसाधक

॥४॥

॥४॥

चक्रस्वामिनि ॥ कुलोत्पीठयोगिनि ॥ सर्वज्ञो ॥ सर्व
शक्तो ॥ सर्वेश्वर्यं ज्ञेयं ॥ सर्वज्ञानमयि ॥ सर्वव्याधिवि
नाशानि ॥ सर्वाधारस्वरूपे ॥ सर्वपापहरे ॥ सर्वानन्द
मयि ॥ सर्वरक्षास्वरूपिणि ॥ सर्वक्षीणं ज्ञेयं ॥ सर्वर
क्षाकरचक्रस्वामीनि ॥ निगमयोगिनि ॥ वशिनि ॥
कामेश्वरी ॥ मोदिनी ॥ विमले ॥ रुणे ॥ जयिनि ॥ सर्व
श्वरी ॥ कौलिनि ॥ सर्वबोगहुरचक्रस्वामिन्यतिर्विह
स्ययोगिनि ॥ षाणिनि ॥ चापिनि ॥ पाशिन्यंकु
रिनि ॥ माहाकामेश्वरी ॥ माहावज्रेश्वरी ॥ माहाभग

माहिनि ॥ माहा श्रीसुंदरी ॥ सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्या
मी ॥ न्यतिरहस्ययोगिनि ॥ श्री श्री माहाभट्टाविके
॥ ५ ॥ स्वनिंदमयचक्रस्यामिनि ॥ परापररहस्ययोगि
नि ॥ श्रीपुरे ॥ श्रीपुरेशि ॥ श्रीपुरसुंदरी ॥ श्रीपुरवासिनि ॥
त्रिपुरा ॥ श्री ॥ श्रीपुरमाहिनि ॥ श्रीपुरसिद्धो ॥ त्रिपु
रांब माहात्रिपुरसुंदरी ॥ माहामहेश्वरि ॥ माहा
माहावाशि ॥ माहामाहाशकै ॥ माहामाहागुप्त ॥ ५ ॥
माहामाहाक्षै ॥ माहामाहानंदे ॥ माहामाहारकंदे ॥

५५
माहामाहाशये ॥ माहामाहाश्री चक्र नगरसंमादि
नमस्ते ॥ ३ ॥ माहाश्री ॥ ही ॥ ऐं ॥ तां ॥ शं ॥ खडा मा प्रोति ॥
येन इत्यस्थिनवै ॥ अष्टादश माहा द्विपसाम्ना
दुभोला भविष्यति ॥ ३ ॥ अक्षयिणी शसहस्राणां त्रौही
ष्यमोहनंक्षमः ॥ यथा विद्यामहासि धीराधिनिस्त
तिमातृकाः ॥ २ ॥ उमाश्रीवायमाहाधीमेराजारा
षुस्थ विपूर्वे ॥ कुंठितेतरकरभयेसंभ्रामेसहीरुपु
वे ॥ ३ ॥ समुद्रेयविनिक्षेपेभूगभेतादिजेभये ॥

मित्रभयेग्रहभयेव्यसने चाग्निधारके ॥ ४ ॥ अन्यस्यपि च
दशेषु मालामंत्रं स्मरेद्बुधशतवेपि द्रवनिमुक्तसाक्षाच्चि
मयो भवेत् ॥ ५ ॥ सायं कारुणिकपुजा विस्तरात्कतुं मुक्षम।
एकावर्तनिमात्रेण च क्रुपुजा फलं भवेत् ॥ नवा उण्विदिवि
गां हलितायां मोहो जसो ॥ एकत्र गणनात्तपो वैदवेदांगो
चरा ॥ ७ ॥ उणिमादिगुणैश्च यै रंजनं पापभंजनं ॥ नरवश्यं
नरेद्राणां वशं ॥ नारिवशं करं ॥ ८ ॥ तस्त्वावरुणस्यामि
देवतामंत्ररुं दजं ॥ कागराजंग भोत्का ऐं प्रिकाणनिक
ये नमः ॥ ९ ॥ गुह्यातिगुह्यगुह्यत्वं ग्राहणस्मृत्कतं जं

॥७॥

रिगाधिरभवतु मे देवी ० ॥ बाला श्रीपुरसुंदरी ॥ अन्नपु
णर्पणमस्तु ॥ इति श्री स्वदु माहात्म्ये ॥ अं संपूर्ण
मस्तु ॥ श्रीदुता नयर्पणमस्तु ॥ मिति ॥ येन वदय
शके १८०३ क्रश्च वृषभनामसंवत्सर त्वत्प्रसादान्
महेश्वरि

॥२॥





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com